गौरि नंदन हे दु:ख भंजन श्रीगणेश

गौरि नंदन, हे दु:ख भंजन
श्रीगणेश तुम्हारा क्या कहना,
मंगल-मूरत हे सिद्धि सदन,
मंगल मूरत हे सिद्धि-सदन,

तुम आन हृदय मेरे रहना,
गौरि नंदन हे दु:ख भंजन,
सिर मुकुट-शशी, गल-रत्नहार,
कर विघ्नपाश शोभा पाता,

इक कर-मध्ये मोदक या वेद,
इक कर अशीष जग को भाता,
इक कर-मध्ये शोभित कुठार,
इक कर-मध्ये शोभित कुठार,

दुष्टों का दलन करते रहना,
गौरि-नंदन, हे दु:ख-भंजन,
गज-बदन विनायक लम्बोदरं,
हे सूपकर्ण मूषक-वाहन,

सेवा में सिद्धि-बुद्धि सदा,
सुर-नर-मुनि करते आवाहन,

हे विद्या-वारिधि विघ्न, हरो,
हे विद्या-वारिधि विघ्न, हरो,

हूँ शरण दया मुझ पै करना,
गौरि-नंदन, हे दु:ख-भंजन,
श्रीगणेश तुम्हारा क्या कहना,
मंगल-मूरत हे सिद्धि-सदन,

मंगल-मूरत हे सिद्धि-सदन,
तुम आन हृदय मेरे रहना,
गौरि-नंदन, हे दु:ख-भंजन,

(गीत रचना- अशोक कुमार खरे)

Source:
https://www.bharattemples.com/gauri-nandan-he-dukh-bhanjan-shri-ganesh-tumhara-kya-kehna/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw